UPHIN 47963

कानपुर

# प्रगति प्रभात

शुक्रवार 11 नवंबर 2022

है। घर से निकलना

# कृषकों के प्रक्षेत्रों पर कृषि वैज्ञानिकों ने शुरू किया परीक्षण

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा आज कृषकों के प्रक्षेत्र पर पराली सड़ाने गलाने के लिए डी कंपोजर का प्रयोग उनके प्रक्षेत्र पर किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि 100 मिलीलीटर डी कंपोजर को 200 लीटर पानी में घोलकर उसमें आधा किलो गुड़ भी मिलाते हैं। तत्पश्चात इस घोल को स्प्रेयर मशीन द्वारा फसल अवशेष पर छिड़काव कर देते हैं जिससे यह फसल अवशेष 15 से 20 दिनों में सड़कर खाद बन जाती है। और मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। डॉक्टर खान ने बताया तत्पश्चात खेत में मोल्ड बोर्ड हल, डिस्क हैरो या रोटावेटर के माध्यम से मिट्टी में मिला दिया जाता है। इस डी कंपोजर का छिड़काव के बाद अगली फसल की बुवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि यह परीक्षण औरंगाबाद, सहतावनपुरवा, बैरी सवाई, झंमा निवादा आदि गांव के क्षेत्रों पर किया गया। इस अवसर पर आसपास क्षेत्र के 100 से अधिक किसान उपस्थित रहे। डी कंपोजर का प्रयोग जनपद में लगभग 200 से अधिक खेतों पर किया जा रहा है साथ ही किसानों से पराली न जलाने के लिए भी अपील की जा रही है।

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

दालत हर चीज में नहीं घुस सकती, प्रदूषण... 12

आजम खान नहीं लड़ पाएंगे रामपुर उप-चुनाव... 10

# जन एक्सप्रेस

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 14 | अंक: 31
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
शुक्रवार | 11 नवम्बर, 2022

## पराली से खाद बनाने का तरीका किसानों को बताया

जन एक्सप्रेस, कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा गुरुवार को कृषकों के प्रक्षेत्र पर पराली सड़ाने गलाने के लिए डी कंपोजर का प्रयोग किया गया। मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने किसानो को बताया कि 100 मिलीलीटर डी कंपोजर को 200 लीटर पानी में घोलकर उसमें आधा किलो गुड मिलाते हैं इसके बाद इस घोल का स्प्रेयर मशीन द्वारा फसल अवशेष पर छिड़काव कर देते हैं जिससे यह फसल अवशेष 15 से 20 दिनों में सड़कर खाद बन जाती है जिसको खेत में मोल्ड बोर्ड हल, डिस्क हैरो या रोटावेटर के माध्यम से मिट्टी में मिला देने के बाद अगली फसल की बुवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि यह परीक्षण औरंगाबाद, सहतावनपुरवा, बैरी सवाई, झंमा निवादा आदि गांव के क्षेत्रों पर किया गया। इस अवसर पर आसपास क्षेत्र के 100 से अधिक किसान मौजूद रहे।

11111.pdf


# शाश्वत टाइम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष : 7, अंक : 188 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, शुक्रवार
11 नवम्बर, 2022
मूल्य ₹ 3.00

www.shashwattimes.com


एक लाख सैनिकों की मौत से घबराए पुतिन? सेना वापस बुलाना रूस के लिए बड़ा झटका....11

# पराली प्रबंधन हेतु डी कंपोजर का कृषकों के प्रक्षेत्रों पर कृषि वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण शुरू

**शाश्वत टाइम्स कानपुर।** चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा आज कृषकों के प्रक्षेत्र पर पराली सड़ाने गलाने के लिए डी कंपोजर का प्रयोग उनके प्रक्षेत्र पर किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि 100 मिलीलीटर डी कंपोजर को 200 लीटर पानी में घोलकर उसमें आधा किलो गुड़ भी मिलाते हैं। तत्पश्चात इस घोल को स्प्रेयर मशीन द्वारा फसल अवशेष पर छिड़काव कर देते हैं जिससे यह फसल अवशेष 15 से 20 दिनों में सड़कर खाद बन जाती है। और मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। डॉक्टर खान ने बताया तत्पश्चात खेत में मोल्ड बोर्ड हल,

डिस्क हैरो या रोटावेटर के माध्यम से मिट्टी में मिला दिया जाता है। इस डी कंपोजर का छिड़काव के बाद अगली फसल की बुवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि यह परीक्षण औरंगाबाद, सहतावनपुरवा, बैरी सवाई,झंमा निवादा आदि गांव के क्षेत्रों पर किया गया। इस अवसर पर आसपास क्षेत्र के 100 से अधिक किसान उपस्थित रहे। डी कंपोजर का प्रयोग जनपद में लगभग 200 से अधिक खेतों पर किया जा रहा है साथ ही किसानों से पराली न जलाने के लिए भी अपील की जा रही है।

वर्ष 16 अंक 307 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, शुक्रवार 11 नवम्बर 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक

नगर छाया

आप की आवाज़.....

# पराली प्रबंधन हेतु डी कंपोजर का कृषकों के प्रक्षेत्रों पर कृषि वैज्ञानिकों द्वारा परीक्षण शुरू

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा कृषकों के प्रक्षेत्र पर पराली सड़ाने गलाने के लिए डी कंपोजर का प्रयोग उनके प्रक्षेत्र पर किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि 100 मिलीलीटर डी कंपोजर को 200 लीटर पानी में घोलकर उसमें आधा किलो गुड़ भी मिलाते हैं तत्पश्चात इस घोल को स्प्रेयर मशीन द्वारा फसल अवशेष पर छिड़काव कर देते हैं जिससे यह फसल अवशेष 15 से 20 दिनों में सड़कर खाद बन जाती है। और मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। डॉक्टर खान ने बताया तत्पश्चात खेत में मोल्ड बोर्ड हल, डिस्क हैरो या रोटावेटर के माध्यम से मिट्टी में मिला दिया जाता है। इस डी कंपोजर का छिड़काव के बाद अगली फसल की बुवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि यह परीक्षण औरंगाबाद, सहतावनपुरवा, बैरी सवाई,झंमा निवादा आदि गांव के क्षेत्रों पर किया गया। इस अवसर पर आसपास क्षेत्र के 100 से अधिक किसान उपस्थित रहे। डी कंपोजर का प्रयोग जनपद में लगभग 200 से अधिक खेतों पर किया जा रहा है साथ ही किसानों से पराली न जलाने के लिए भी अपील की जा रही है।

# कृषकों के प्रक्षेत्रों पर कृषि वैज्ञानिकों ने शुरू किया परीक्षण

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीपनगर द्वारा आज कृषकों के प्रक्षेत्र पर पराली सड़ाने गलाने के लिए डी कंपोजर का प्रयोग उनके प्रक्षेत्र पर किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि 100 मिलीलीटर डी कंपोजर को 200 लीटर पानी में घोलकर उसमें आधा किलो गुड़ भी मिलाते हैं। तत्पश्चात इस घोल को स्प्रेयर मशीन द्वारा फसल अवशेष पर छिड़काव कर देते हैं जिससे यह फसल अवशेष 15 से 20 दिनों में सड़कर खाद बन जाती है। और मिट्टी की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। डॉक्टर खान ने बताया तत्पश्चात खेत में मोल्ड बोर्ड हल, डिस्क हैरो या रोटावेटर के माध्यम से मिट्टी में मिला दिया जाता है। इस डी कंपोजर का छिड़काव के बाद अगली फसल की बुवाई की जाती है। उन्होंने बताया कि यह परीक्षण औरंगाबाद, सहतावनपुरवा, बैरी सवाई,झंमा निवादा आदि गांव के क्षेत्रों पर किया गया। इस अवसर पर आसपास क्षेत्र के 100 से अधिक किसान उपस्थित रहे। डी कंपोजर का प्रयोग जनपद में लगभग 200 से अधिक खेतों पर किया जा रहा है साथ ही किसानों से पराली न जलाने के लिए भी अपील की जा रही है।